

खेल और खिलौने बच्चों के विकास तथा उनके सीखने की शैली

रौमिला सोनी*

खेल आधारित शिक्षण विधि, जिसमें खिलौनों का प्रयोग होता है, बुनियादी अवस्था में सबसे उपयुक्त और पंसदीदा शिक्षण विधि है। अधिकांश शोध प्रारंभिक स्तर पर सीखने में खेल की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि करते हैं। शोधकर्ता इस बात पर सहमत हैं कि भाषा, साक्षरता और प्रारंभिक गणना बच्चे के जीवन के प्रथम छह वर्षों में विकसित होती है। विकासात्मक उपयुक्त खिलौनों और खेल सामग्री के साथ उच्च गुणवत्तापूर्ण खेल खेलना बच्चों की भाषा, साक्षरता और गणना कौशलों को पूर्णरूप से विकसित करने में सहायक होते हैं। सभी प्रकार के खेल अनुभवों से बच्चे का मस्तिष्क विकसित होता है। सभी अवस्थाओं में बच्चों को खिलौने से खेलने में खुशी मिलती है और उन्हें बड़ा मज़ा आता है, बस बच्चों की आयु, विकास और योग्यता के अनुसार खिलौनों का जटिलता स्तर बढ़ता जाता है। पारंपरिक खेल और खिलौने, आजकल दुकानों पर बिकने वाले फैंसी, महंगे और इलैक्ट्रॉनिक खिलौनों की अपेक्षा सरल और स्वयं शिक्षक द्वारा आसानी से विकसित किए जाने वाले होते हैं और वे परिवेश से ही प्रेरित होते हैं। इस बात में कोई शक नहीं कि पारंपरिक निर्मित खिलौने बच्चों के समग्र विकास, विशेष रूप से उनकी भाषा, साक्षरता और प्रारंभिक गणित के विकास के लिए बेहतरीन होते हैं। यदि शिक्षक और अभिभावक इन खिलौनों और खेल सामग्रियों में मौजूद अवसरों से परिचित होते हैं, तो इनका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। प्रस्तुत लेख खेल-खिलौने के महत्व एवं उनकी अध्ययन-अध्यापन पर आधारित हैं।

भारतीय खिलौनों का इतिहास बहुत पुराना है। खिलौने और गुड़ियाँ भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं और इसका सबसे अच्छा उदाहरण है— कर्नाटक और आंध्र प्रदेश का चेन्नापटन, जहाँ विभिन्न आकृतियों और आकार के हस्तनिर्मित खिलौने और गुड़ियाँ बच्चों और बड़ों को बहुत लुभाते हैं। आज बच्चे उन पारंपरिक खिलौनों की सुंदरता से अनभिज्ञ हैं जिनसे

उनके माता-पिता या दादा-दादी खेला करते थे। सभी बच्चे खेलना पसंद करते हैं क्योंकि खेलना उनका स्वभाव है। विश्व स्तर पर यह बात मान ली गई है कि बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्ष (6-8 वर्ष की आयु तेज़ी से) उसके विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं क्योंकि इस दौरान मस्तिष्क का तेज़ी से विकास होता है और ये वर्ष अत्यंत संवेदनशील होते हैं। इस

* एसोसिएट प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, अरबिंदो मार्ग, नयी दिल्ली 110 016

समय बच्चा जो कुछ सीखता है, उदाहरण के लिए, वह जो करता है, सुनता है, जिससे खेलता है, वह बच्चे के जीवन में गहराई से अंतः स्थापित हो जाता है। इन प्रारंभिक वर्षों में हुई किसी क्षति की भरपाई करना अत्यधिक कठिन होता है। छोटे बच्चे सक्रिय एवं व्यस्त शिक्षार्थी होते हैं उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार की खेल गतिविधियों में आनंद आता है और वे खिलौनों और खेल सामग्री को खोजना शुरू कर देते हैं।

खिलौने बच्चों के लिए ऐसे उपकरण हैं जिनके द्वारा वे अपने आस-पास की दुनिया को जानते हैं। खिलौने छोटे बच्चों को खुशी और मजा देते हैं। उनके जीवन में खिलौनों का एक विशेष स्थान होता है, ये उनके चिंतन को उत्प्रेरित करते हैं और बातचीत के लिए भाषा के प्रयोग के कौशल में सक्षम बनाते हैं। इन नए विकसित कौशलों द्वारा बच्चे जटिल समस्याओं का समाधान करने, प्रश्न पूछने और कहानियाँ बनाने तथा उनका अभिनय करने के लिए कल्पना का प्रयोग शुरू करते हैं।

प्रारंभिक वर्षों में की गई अधिकांश गतिविधियों को खिलौनों और अधिगम सामग्री की आवश्यकता होती है। इन वर्षों के दौरान बच्चे अपनी इंद्रियों और गति में समन्वय करना सीखते हैं। इसके साथ ही अपने परिवेश की वस्तुओं को अधिक कुशलता और जटिल तरीके से संभालना शुरू कर देते हैं। बच्चे इन वर्षों में बहुत सक्रिय होते हैं, हम उनसे एक स्थान पर लंबे समय तक टिककर बैठे रहने की आशा नहीं कर सकते। बच्चों को मजेदार खेलों और सीखने के लिए ढेर सारी गतिविधियों की आवश्यकता होती है, जैसे कि झूलना, घूमना, दौड़ना और अपने शरीर की गति से प्रसन्नता प्रकट करना। एक बच्चे को

आयु और विकासात्मक उपयुक्त खेल सामग्री की भी आवश्यकता होती है जिससे उन्हें आनंद मिलता है। इनसे आदतों के निर्माण में भी मदद मिलती है, उदाहरण के लिए, बच्चे सुनना, ध्यान से देखना, निर्देशों का पालन करना, प्रश्न पूछना, उनके उत्तर देना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, सहयोग करना और अन्य अनेक सामाजिक कौशल सीखते हैं। क्या हम ये सभी कौशल आज के परिदृश्य में, जहाँ बच्चे टेलीविज़न या कंप्यूटर के सामने बैठे रहते हैं या कंप्यूटर पर गेम्स खेलते हैं और मोबाइल फ़ोन या अन्य यांत्रिक उपकरण प्रयोग करते हैं, प्रदान कर सकते हैं? प्रारंभिक वर्षों के पाठ्यक्रम में टेक्नोलॉजी को एकीकृत करना ज़रूरी है, परंतु हम बचपन से उनसे खिलौनों से खेलने की खुशी को नहीं छीन सकते। खेलने की सामग्री के लिए सरल प्रतिदिन की वस्तुएँ इस्तेमाल की जा सकती हैं क्योंकि इन सरल सामग्रियों और खिलौनों से बच्चों के समग्र विकास में सहायता मिलती है। इससे बड़ों को यह जानने में भी मदद मिलती है कि बच्चे खिलौनों और अन्य सामग्री से खेलते समय क्या और कैसे सीखते हैं। पारंपरिक भारतीय खिलौनों और खेल का बच्चों के लालन-पालन और फिर विद्यालयों में प्रारंभिक स्तर की शिक्षा हासिल करने में विशेष स्थान होता है।

खिलौने शिशुओं को अपनी नज़दीकी दुनिया को समझने में मदद करते हैं। खिलौने उन्हें वस्तुओं का प्रयोग करना सीखने में मदद करती है, उदाहरण के लिए, गेदों और ब्लॉक्स के साथ खेलने से बच्चा समझता है कि गोल चीज़ें लुढ़कती हैं किंतु किनारे वाली वस्तुएँ नहीं। बच्चे के लिए शैक्षिक खिलौने और खेल महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक हैं जो सीखने की योग्यता को बढ़ावा देते हैं।

खिलौनों के साथ खेलना बच्चों के समग्र विकास को प्रभावित करता है

यदि आप बच्चों के खेल का अवलोकन करें और रुककर उनके बनाए ढाँचों, आकृतियों, नमूनों पर विचार करें और देखें कि वे अपने खेल के सामान के साथ कैसे काम करते हैं, तो आप यह देखकर आश्चर्य में पड़ जाएंगे कि वे अपने खिलौनों के संसार से कितना कुछ सीखते हैं। खिलौनों से खेलना प्रत्येक बच्चे का अधिकार है और हम उन्हें इससे वंचित नहीं कर सकते। ऐसा नहीं है कि जिन बच्चों को खिलौने नहीं मिलते, वे खेलते ही नहीं हैं। वे अपने आस-पास के परिवेश में कुछ-न-कुछ खेलने के लिए ढूँढ़ लेते हैं, उदाहरण के लिए, वे किसी कपड़े के टुकड़े या अपनी माँ की साड़ी से गुड़िया घर बना लेते हैं; किसी चम्मच या लकड़ी के चारों ओर फटा कपड़ा या पुराना कपड़ा लपेटकर सुंदर-सी गुड़िया बना लेते हैं। बच्चों को गुड़ियों से खेलना, धागे में मोती पिरोना, ब्लॉक्स को एक साथ जोड़ना, सॉफ़्ट टॉय, पहेलियाँ, मिलान करने के खेल, कहानियाँ, आकृति छाँटना आदि खेल पसंद होते हैं। बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं, वे इन्हीं खिलौनों का दूसरी प्रकार से प्रयोग करने लगते हैं; उदाहरण के लिए, जिन ब्लॉक्स को वह उठाकर घूमते थे, उसी से अब वह एक पुल या घर बनाते हैं या उन्हीं ब्लॉक्स को सड़क पर चलती कार के रूप में प्रयोग करते हैं। इन नकल वाले खेलों से बच्चों की कल्पना विकसित होती है और उनके चिंतन कौशल का विकास होता है। बच्चों को मटकों, कड़ाही, लकड़ी के चम्मचों को ड्रम और स्टिक के रूप में इस्तेमाल करना पसंद होता है, ये उनके लिए संगीत यंत्र का काम करते हैं। शोध दर्शाते हैं कि अच्छे खेल कौशल वाले बच्चे बाद की स्कूल की पढ़ाई में अच्छा करने की ओर अग्रसर

होते हैं और एक समझदार, संतुलित व्यक्ति बनते हैं। खिलौनों से खेलना चिंतन कौशलों के विकास में सहायता करता है, जैसे— प्रत्यास्मरण, वस्तुओं को व्यवस्थित करना, समस्या समाधान आदि। खेल के दौरान मिलकर काम करने, खिलौनों से खेलने व साझा करने तथा अपने विचार साझा करने से बच्चों के सामाजिक कौशल विकसित होते हैं। बच्चों को जब उपयुक्त खिलौने और वस्तुएँ खेलने के लिए दिए जाते हैं, तो वे लंबे समय तक खेलते हैं और सभी विकासात्मक क्षेत्रों में उसका लाभ होता है। बच्चों के साक्षरता और गणना विकास में सहायता और सहयोग करने के लिए खिलौने अतिउत्तम शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री हैं। विशेषरूप से साक्षरता और गणना के लिए चयनित खिलौने कक्षा की अधिगम टोकरी की महत्वपूर्ण संपत्ति होते हैं जो बच्चे को पठन और चिंतन कौशलों के प्रति प्रेरित और आकर्षित करते हैं।

विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों हेतु खिलौने और खेल सामग्री

शारीरिक और गत्यात्मक विकास हेतु खिलौने और खेल उपकरण

यदि बच्चों को आयु और विकासात्मक उपयुक्त खिलौने और उपकरण प्रदान किए जाएँ तो बच्चों को आधारभूत छोटी-बड़ी मांसपेशीय कौशल, जैसे— चढ़ना, चलना, दौड़ना, घिसटना, कूदना आदि प्रबल हो जाते हैं। इन सभी के द्वारा प्रारंभिक वर्षों में सीखना अधिक सरल और आनंददायक हो जाता है। वयस्कों को चाहिए कि वे ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करें जिनसे बच्चों को अपनी सूक्ष्म और स्थूल मांसपेशियों को मजबूत तथा नए पेशीय कौशल सीखने में सहायता मिले। झूले, फिसलपट्टी, सी-सॉ की आवश्यकता

स्थूल पेशीय कौशल के विकास के लिए होती है। ब्लॉक्स, पहेलियाँ, क्रेयॉन्स, मोती, चिमटे से चीजें उठाना, बटन लगाना, लेंसिंग, नेस्टिंग और खिलौनों का ढेर लगाना, रैटल्स आदि की ज़रूरत छोटी या सूक्ष्म पेशीय कौशलों को विकसित करने के लिए होती है। सक्रिय खेलों के लिए खिलौनों द्वारा शरीर मज़बूत बनता है और रंग, आकृति, ध्वनि, बनावट और पैटर्न से संबंधित खिलौने बच्चों के ग्रहण बोध को विकसित करते हैं।

चिंतन कौशल के विकास हेतु खिलौने

प्रारंभिक बौद्धिक विकास में विविध प्रकार के उत्प्रेरक खिलौनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास में मोतियों को धागे में पिरोना, एक पहेली पूरी करना, आकृति छाँटना, रंगों को छाँटने वाले डिब्बे आदि सहायक खिलौने हैं। बच्चे जिस समय ब्लॉक बिल्डिंग, ढाँचे बनाने या जोड़ने में संलग्न होते हैं उस समय वे खिलौने को ठीक से रखना, क्रम में लगाना, ऊँचाई या गहराई की समझ विकसित कर सकते हैं। ब्लॉक्स बहुमुखी कार्य करते हैं और छोटे बच्चों को व्यस्त रखते हैं तथा उनका मनोरंजन करते हैं।

भाषा और प्रारंभिक साक्षरता कौशल को बढ़ावा देने हेतु खिलौने

खिलौने बच्चों को आकर्षित करते हैं और उन्हें बातें करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आपने आमतौर पर देखा होगा कि बच्चे यह बताने के लिए बड़े उत्सुक रहते हैं कि उन्होंने क्या बनाया। फिर आप बदले में जो कहते हैं वे उसे बड़े प्यार से सुनते हैं। खिलौने टेलीफोन और बोलती किताबें शिक्षण में सहायक खिलौने हैं जो बच्चों के भाषायी और संप्रेषण कौशल को बढ़ाते हैं।

सृजनात्मकता और कल्पना कौशल को विस्तृत करने वाले खिलौने

कला अधिगम सामग्री समृद्ध संवेदी अनुभव प्रदान करती है। बच्चे वस्तुओं को उलटते-पलटते हैं, दबाते हैं, गुंधे हुए आटे को उँगली से छेदते हैं, मिट्टी (क्ले) में उँगलियाँ घुमाते हैं। उँगलियों से रंग करते हैं— ये सभी अनुभव मस्तिष्क में बनने वाले संयोजनों को दृढ़ करते हैं। कठपुतलियाँ, ड्रेस अप क्लोदिंग जैसे खिलौने कल्पना को बढ़ाते हैं, वहीं प्रचलित इलेक्ट्रॉनिक और तकनीकी खिलौने बच्चे की बढ़ती स्मरण शक्ति को उत्प्रेरित करते हैं।

सामाजिक-भावात्मक कौशल के निर्माण हेतु खिलौने

खिलौने भावात्मक सुरक्षा प्रदान करते हैं। बहुउद्देशीय खिलौने समूहों में खेले जाते हैं और इस प्रकार बच्चों को साझा करने और सहयोग करने में सहायता करते हैं। खिलौनों से खेलते हुए बच्चे अपने भीतर की दुनिया को खोजते हैं। वे अपनी भावना प्रकट करने के लिए किसी खेल वस्तु का प्रयोग करते हैं। कई बार बच्चे गुड़िया से खेलते हुए या नाटकीय खेल, जैसे घर-घर आदि खेलते समय अपने मन में दबी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। कई बार बच्चे स्वयं बड़ों की भूमिका में अभिनय करने के लिए कुछ खिलौनों का प्रयोग करते हैं, इससे उनकी 'स्व' की समझ विस्तृत होती है।

खिलौने भारतीय संस्कृति के मूल्य समझाते हैं। गुड़ियाँ भारतीय समाज की विभिन्न संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ब्लॉक्स स्कूल, घर की इमारतों, पुलों, रेलों का प्रतिनिधित्व करते हैं और आधुनिक गतिशीलता का भाव आत्मविश्वास बढ़ाते हैं। खिलौनों की दुनिया के माध्यम से बच्चे संगठन

सीखते हैं। खिलौनों और अधिगम सामग्री का चुनाव करना बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि खिलौनों की पसंद मूल्यों का संचरण करती है और अंतर्वैयक्तिक कौशलों का विकास करती है।

नवाचारी, स्वदेशी, आयु और विकासात्मक उपयुक्त खिलौनों का चुनाव

क्या बाज़ार में सुंदर पारंपरिक खिलौने उपलब्ध हैं? लकड़ी की स्टैकिंग गुड़िया, गतिशील लकड़ी के खिलौने, रसोई के बरतन (चमकीले रंगों, गैर विषैले पदार्थों वाले) आज बाज़ार से गायब हैं और बच्चों के जीवन से भी। आमतौर पर एक पारंपरिक भारतीय खिलौना लकड़ी का बना होता है, यह गैर इलेक्ट्रॉनिक और बहुत कम तकनीकी प्रयोग वाला होता है। आज जब हम प्लास्टिक के बने खिलौने खरीदते हैं तो वह इसीलिए क्योंकि ये लकड़ी से बने खिलौनों की तुलना में सस्ते होते हैं। किंतु सुंदर स्वदेशी लकड़ी के खिलौने वास्तव में मानव विकास के प्रारंभिक वर्षों में अधिगम के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, विशेष रूप से पहली जड़ने का बोर्ड, लकड़ी के ब्लॉक्स, स्टैकिंग आकृतियाँ, आकृति छँटाई यंत्र, पेपर मेशी स्टैकिंग गुड़िया आदि। बच्चे इन खिलौनों द्वारा स्थानीय जानवरों, बरतनों, रंगों और आकृतियों के बारे में सीखते हैं। अन्य देशों की तरह भारत में भी आजकल हर जगह चाहे स्थानीय बाज़ार हो, मॉल हो या घर, छोटे-छोटे बच्चों के हाथ में कोई गुड़िया या खिलौने के स्थान पर मोबाइल फ़ोन नज़र आ रहे हैं। बड़ों को यह बात समझनी चाहिए कि टेक्नोलॉजी का अर्थ मोबाइल फ़ोन पर गेम्स खेलना नहीं है। अब वह समय आ गया है कि जब हम नई पीढ़ी के लिए कुछ ऐसा नया सोचें और बनाएँ जहाँ हम स्वदेशी खिलौनों और गेम्स में टेक्नोलॉजी को ला सकें।

आज बाज़ार में आयातित इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल खिलौनों के नए उत्पादों की बाढ़-सी आई हुई है, उसका क्या किया जाए? खिलौना निर्माता आजकल अभिभावकों के सामने खिलौनों का ऐसा खजाना पेश करते हैं कि वे वशीभूत हो जाते हैं, लेकिन सही खिलौने का चुनाव करना बहुत ज़रूरी है। हम बड़े लोग बाज़ार में आयातित खिलौने देखकर अति उत्साहित हो जाते हैं और बिना उनका उपयोग और लाभ जाने उन्हें खरीद लेते हैं। बच्चे भी उनके रंगों, प्रकाश और गति से आकर्षित हो जाते हैं, किंतु जल्दी ही उनसे ऊबकर फिर से जोड़-तोड़ वाले खिलौनों पर लौट आते हैं। बैटरी चालित खिलौने बच्चों को टी.वी. देखने का आदी बना देते हैं, अतः खिलौनों को आयु और विकासात्मक उपयुक्त, बच्चों के लिए रोचक और चुनौतीपूर्ण होना चाहिए। नए-नए तकनीकी सहायता प्राप्त खिलौने अत्यधिक अनुक्रियात्मक और उत्प्रेरक होते हैं। किंतु इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि ये खिलौने लंबे समय तक बच्चों को एक ही जगह बिठाकर रखने वाले न हों, बल्कि उन्हें संलग्न रखने वाले, बहुउपयोगी, बहुउद्देशीय और उनकी योग्यताओं के अनुकूल हों। खिलौने ऐसे हों जिन्हें बच्चे स्वयं सँभाल या जोड़-तोड़ कर सकें, कक्षा अधिगम में जिनका प्रयोग किया जा सके, जिन्हें सँभालना आसान हो और जो सामाजिक कौशलों को बढ़ावा देने वाले हों। इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि तकनीकी सहायता प्राप्त खिलौने सामूहिक खेल के लिए प्रेरित करें। खिलौने भली प्रकार निर्मित, मज़बूत और बच्चों के लिए सुरक्षित होने चाहिए। आधुनिक खिलौने बच्चों के लिए कई बार हानिकारक या खतरनाक होते हैं क्योंकि इनमें निम्न स्तर का प्लास्टिक या अन्य हानिकारक

पदार्थ प्रयोग किए जाते हैं। खिलौनों में टेक्नोलॉजी के प्रयोग से इनकार नहीं किया जा सकता किंतु हमें यह याद रखना चाहिए कि छोटे बच्चों को ठोस हस्तकौशलीय खिलौनों की आवश्यकता होती है जिन्हें वे धक्का दे सकें, तोड़-मरोड़ सकें, कुछ नया बना सकें आदि। हमें ऐसे खिलौनों की आवश्यकता है जिससे प्रारंभिक वर्षों में एसटीईएम/एसटीईएम (साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियर, आर्ट्स और मैथ्स) को बढ़ावा मिले। ऐसे खिलौने इन मूलभूत क्षेत्रों में बच्चों के कौशल विकसित करने में सहायता करते हैं। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों द्वारा गेम्स खेलने के लिए मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से चिंतित हैं। एसटीईएम और तकनीकी सहायता प्राप्त खिलौने बच्चों को खिलौनों में संलग्न रखने के लिए उत्तम हैं, साथ ही डिजिटल ज्ञान भी उपलब्ध कराते हैं। तकनीकी सहायता प्राप्त बोलते खिलौने बच्चों के बोलने और शब्द भंडार में मदद करते हैं और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की सहायता भी करते हैं। तकनीक का प्रयोग केवल प्रदर्शन और दिखावे के लिए नहीं होना चाहिए बल्कि मूल्यों, उद्देश्य, अर्थ तथा आनंद को बढ़ाने के लिए होना चाहिए। तकनीकी खिलौने गंभीर शारीरिक क्षीणता वाले बच्चों का भी सहयोग करते हैं, जैसे— तीन पहिये की साइकिल की सवारी, बोलता टेलीफोन आदि।

ऐसे खिलौनों का प्रावधान करने की आवश्यकता है जो बच्चों को शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक रूप से उत्प्रेरित करें। खिलौने ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को दूसरों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे— बिल्डिंग ब्लॉक्स, अक्षर ब्लॉक्स, संख्या ब्लॉक्स, गुड़िया घर और नए-नए बोर्ड गेम्स। सभी

बच्चों के लिए खिलौने ऐसे हों जो जेंडर संबंधी रूढ़ियों को तोड़ने वाले हों। खिलौनों का चुनाव बच्चों के कौशल और मिज़ाज के अनुरूप होना चाहिए।

स्वयं से प्रश्न करने का समय

क्या हम मधुबनी में मुलायम कपड़े की गुड़ियाँ के उत्पादन के बारे में सोच सकते हैं? क्या हम पुराना लकड़ी का चैस बोर्ड बनाने की सोच सकते हैं और इसे स्कूल के आंतरिक खेल का हिस्सा बना सकते हैं? आज कितने घरों में कैरम बोर्ड होता है? क्या इस तरह के गेम्स और खिलौनों से जुड़ाव और मैत्रीभाव नहीं बढ़ता और साथ ही ये हमें नियम और मूल्य नहीं सिखाते? ग्रामीण भारत में आज भी बच्चों को लकड़ी का लट्टू नचाने में बहुत आनंद आता है। शहरों के कितने बच्चों को इसके बारे में पता है? क्या आज हम लड़कियों को रस्सी कूदते देखते हैं?

निष्कर्ष

हमारे छोटे बच्चों को खिलौनों से खेलने का पूरा अधिकार है। खिलौने सुरक्षित, उत्प्रेरक, पर्यावरण अनुकूलित और टिकाऊ होने चाहिए। खिलौने बच्चों को स्क्रीन के इस्तेमाल के बिना व्यस्त रखने का सबसे बढ़िया उपाय होते हैं। एक बच्चे के समग्र विकास में एक अच्छा खिलौना बहुत मदद करता है। बच्चों के स्वास्थ्य व कल्याण में खिलौनों से खेलने का अत्यधिक महत्व है और ये उन्हें एक ज़िम्मेदार नागरिक बनने में सहायता करते हैं। हमें बच्चों के खिलौनों से खेलने के प्रत्येक अवसर का समर्थन करना चाहिए और खेल के मूल्य को पहचानना चाहिए। हमें बच्चों को गेम्स और खिलौने खेलने में ही नहीं, बल्कि आयु उपयुक्त खिलौने बनाने में भी शामिल करना चाहिए ताकि वे उपभोक्ता ही नहीं निर्माता भी

बनें। छोटी आयु में ही बच्चों में उद्यमशीलता भर देने की आवश्यकता है और शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर कौशल प्रशिक्षण का नियोजन किया जाना चाहिए। स्कूल और उद्योग में भागीदारी की आवश्यकता है और छोटे बच्चों के लिए विद्यार्थियों द्वारा फैक्ट्री मोड

में खिलौनों का निर्माण करने और भारत में विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को पालने-पोसने में मदद करने की ज़रूरत है। आत्मनिर्भर भारत के दर्शन को बढ़ावा मिलना चाहिए। आइए, हम सब मिलकर खिलौना खेल आधारित शिक्षण विधि को बढ़ावा दें।

© NCERT
not to be republished